ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)01-06
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

श्री विनोद कुमार झा
सेवानिवृत प्रधानाध्यापक, सीतामढ़ी, बिहार

Corresponding Author :
श्री विनोद कुमार झा
सेवानिवृत प्रधानाध्यापक, सीतामढ़ी, बिहार

इतिहास के आईने में प्रथम लोकसभा चुनाव (1951-52)

1947 में भारत की आजादी के बाद मार्च 1950 में चुनाव आयोग का गठन हुआ। भारत के प्रथम चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन नियुक्त किये गए। उसके एक महीने बाद संसद में लोक प्रतिनिधित्व कानून पारित हुआ। संसद में इस अधिनियम के प्रस्ताव को पंडित जवाहरलाल नेहरु ने पेश किया था।

सुकुमार सेन का कार्यकाल 21 मार्च 1950 से 19 दिसम्बर 1958 तक रहा। उनका जन्म 1899 में हुआ था। उन्होंने कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज और लंदन विश्वविद्यालय में पढ़ाई की थी। उन्हें लंदन विश्वविद्यालय से गणित में स्वर्ण पदक मिला था।

देश में पहले लोकसभा के लिए पहली अधिसूचना 1 नवम्बर 1951 को हुई थी। 29 नवम्बर तक विभिन्न तिथियों में अधिसूचना जारी की गयी थी।

भारत में पहला आमचुनाव 25 अक्टूबर 1951 से 21 फरवरी 1952 तक हुआ था। लोकसभा मतदान 2 जनवरी 1952 से 25 जनवरी 1952 तक 17 चरणों में हुआ था। विदित हो कि दिसम्बर 1951 से फरवरी 1952 के बीच स्वतंत्र भारत में लोकसभा तथा विधान सभा का पहला चुनाव एक साथ हुआ था। यह व्यवस्था पिछली सदी में सातवें दशक (1970 ई.) के अंत तक जारी रही।

अपवाद स्वरूप पंजाब, बिलासपुर, कोचीन और त्रावणकोर के लिए अक्टूबर 1951 तथा हिमाचल प्रदेश के लिए 10 सितंबर 1951 को जारी कर दी गई थी|पर्वतीय क्षेत्रों में जनवरी के पूर्व बर्फबारी के कारण प्रक्रिया पूरी की गई थी।

1951 ई. में घर-घर जाकर मतदाताओं का पंजीकरण किया गया था। 28 लाख महिलाएँ 1951 के पहले आम चुनाव में मतदान नहीं कर सकी थी, क्योंकि संकोच के कारण उन्होंने मतदाता सूची में अपना उचित नाम देने से इन्कार कर दिया था। उनका कहना था कि उनकी पहचान किसी की माँ और किसी की पत्नी के रूप में की जाय।

1951 के पहले आम चुनाव में 18 करोड़ मतदाताओं को प्रेरित करने हेतु 397 अखबार चुनाव आयुक्त द्वारा छपवाए गए। इन अखबारों में चरणबद्ध तरीके से समझाया गया कि कहाँ और कैसे मतदान होगा तथा मतदान करने से क्या बदल जाएगा।

1951-52 के लोकसभा का चुनाव प्रचार पैदल, बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी से होता था। चुनाव प्रचार के लिए चौपाल भी लगाया जाता था। आवागमन का साधन नहीं था। मुख्य चुनाव से पहले 1951 में मॉक पोल कराया गया ताकि जनता मतदान से परिचित हो।

आवागमन के साधन नहीं जिससे चुनाव कर्मियों को बूथ तक जाने में भारी करनी पड़ती थी। जंगल, नदी, पहाड़ आदि से गुजरना कठिन होता था। मणिपुर के क्षेत्रों में मतदान सामग्री पहुँचाने के लिए स्थानीय लोगों को एक-एक कम्बल तथा बंदूक का लाइसेंस देने की बात कही गई थी।

पार्टियों और उम्मीदवारों के लिए चुनाव चिह्न की व्यवस्था की गई थी। लेकिन उन दिनों मतपत्र पर नाम और चिह्न नहीं थे। हर पार्टी के लिए अलग अलग मतपेटी थी, जिनपर उनके चुनाव चिह्न अंकित कर दिए गए थे।

1951 के चुनाव में लोहे की दो करोड़ बारह लाख मतपेटियाँ बनायी गई थी। करीब 62 करोड़ मतपत्र छापे गए थे। उस समय के चुनाव आयुक्त की सूझबूझ से प्रथम चुनाव की मतपेटियों को सुरक्षित रखने के कारण दूसरे चुनाव 1957 में करीब साढ़े चार करोड़ की बचत हुई थी, जो उस ज़माने के लिए भारी बचत थी। विदित हो कि 1951 के पहले लोकसभा चुनाव में लगभग 10.45 करोड़ रूपये खर्च हुए थे। जबकि 17वीं लोकसभा चुनाव 2019 में खर्च का आँकड़ा 55000 करोड़ (पचपन हजार करोड़) रुपये पहुँच गया। 18 वीं लोकसभा चुनाव 2024 में खर्च का आँकड़ा 60000 करोड़ (साठ हजार करोड़) रूपये है।

1951 के पहले आम चुनाव में कुछ मतपेटियाँ फूलों से सजी हुई और सिंदूर से सनी हुई पाई गईं, जिससे पता चलता है कि लोग मतपेटी को पूजा की वस्तु मानते थे। इसके अलावा कई बक्सों में मतपत्रों के साथ विविध वस्तुएँ भी थीं, जैसे- सफलता की कामना करनेवाली चिट, फ़िल्मी सितारों की तस्वीरें, सिक्के, करेंसी नोट आदि। एक आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार साक्षरता दर कम होने की वजह से एक पिछड़े जिले में वोट डालने से पहले मतदाता को मतपेटी के सामने प्रार्थना करते देखा गया था। मद्रास में एक बूढ़ी महिला मतदाता को मतदान कक्ष के अन्दर मतपेटी से यह कहते सुना गया कि आप हमें सस्ता और अधिक चावल दीजिए।

प्रथम लोकसभा के आँकड़े निम्नलिखित थे:-

देश की आबादी	-	36 करोड़
पात्र मतदाताओं की संख्या	-	17.36 करोड़
राजनीतिक दलों की संख्या	-	53
उम्मीदवारों की संख्या	-	1874
जमानत राशि- सामान्य वर्ग	-	500 रूपये
एस. सी./एस. टी.	-	250 रूपये
बूथों की संख्या	-	196084
कुल मतदान प्रतिशत	-	45%
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को प्राप्त मत प्रतिशत	-	45.7%

पहला वोट हिमाचल प्रदेश के चिनी जिले में डाला गया। 364 सीटों के साथ जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जीत हुई।

चुनाव परिणाम के बाद राजनीतिक दलों के जीते गए सीटों की संख्या निम्न प्रकार थी:-

	दल		जीत की सीटों की संख्या
(1)	कांग्रेस	-	364
(2)	सीपीआई	-	16
(3)	जनसंघ	-	03
(4)	सोशलिस्ट पार्टी	-	12
(5)	किसान मजदूर प्रजा पार्टी	-	09
(6)	निर्दलीय	-	37
	कुल	-	441 सीट

प्रथम लोकसभा चुनाव (1951-52) में चुनाव जीतनेवाले बड़े चेहरे निम्नलिखित थे:-

(1) पंडित जवाहरलाल नेहरू

(2) लालबहादुर शास्त्री

(3) सुचेता कृपलानी

(4) गुलजारीलाल नंदा

(5) काका साहेब कालेलकर

(6) श्यामा प्रसाद मुखर्जी

पूर्व कानून मंत्री भीमराव अम्बेडकर कांग्रेस उम्मीदवार से चुनाव हर गए थे।

17 अप्रैल 1952 को प्रथम लोकसभा का गठन किया गया जबकि 3 अप्रैल 1952 को राज्यसभा का गठन किया गया था। जवाहरलाल नेहरू ने प्रधानंमत्री के रूप में भारत सरकार का गठन किया था।

13 मई 1952 को पहली लोकसभा का पहला सत्र शुरू हुआ था। इसी दिन राज्यसभा के प्रथम सत्र की शुरुआत हुई।

पहली लोकसभा का कार्यकाल अप्रैल 1952 से अप्रैल 1957 तक था। प्रथम लोकसभा अध्यक्ष जी.वी.मावलंकर थे। पहली लोकसभा में कुल-677 दिन काम हुआ था। 1952 के पहले लोकसभा चुनाव में बिहार में कुल-55 सीटें थीं। चुनाव में 12 दलों के प्रत्याशीयों ने भाग लिया था। जिनमे एक निर्दलीय सहित पाँच दलों के प्रत्याशी विजयी हुए थे।

बिहार में कुल मतदाताओं की संख्या- 1 करोड़ 80 लाख 80 हजार 181 थी।

वोट डालने वाले मतदाताओं की संख्या- 99 लाख 92 हजार 451 थी।

	दल	जीती हुई सीट	मत प्रतिशत
(1)	कांग्रेस -	45	45.77%
(2)	सोशलिस्ट पार्टी-	03	21.28%
(3)	छोटानागपुर संथाल परगना जनता पार्टी-	01	
(4)	झारखंड पार्टी-	01	
(5)	लोकसेवक संघ-	02	
(6)	निर्दलीय-(शाहाबाद उत्तर-पश्चिम सीट से निर्दलीय कमल सिंह)-	01	

49 सीटों पर निर्दलीय प्रत्याशी थे जिन्हें 13.08% मत मिले थे तथा दो सीटों पर जनसंघ को 40 % वोट मिले थे।

1952 तथा 1957 में एक ही लोकसभा संसदीय क्षेत्र से दो-दो सदस्य निर्वाचित होते थे। इन्हें दो सदस्यीय क्षेत्र के नाम से जाना जाता था।

प्रथम लोकसभा चुनाव 1952 में बिहार के कुल 55 सीटों में– 11 दो सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र तथा 33 एक सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र थे। इस प्रकार दो सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र से 22 तथा एक सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र से 33 प्रत्याशी चुने जाते थे।

दूसरी लोकसभा चुनाव 1957 में बिहार में सीटों की संख्या-53 कर दी गई। जिसमे एक सदस्यीय सीटों की संख्या-37 तथा दो सदस्यीय सीटों की संख्या-08 कर दी गई।

प्रथम लोकसभा चुनाव 1952 में बिहार में दो सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र थे– गया पूर्वी, शाहाबाद दक्षिण, सारण सह चंपारण, मुजफ्फरपुर सह दरभंगा, मुंगेर सदर सह जमुई, भागलपुर सह पूर्णिया, पूर्णिया सह संथाल परगना, पलामू सह हजारीबाग सह राँची, मानभूम उत्तरी, मानभूम दक्षिण सह धलभूम, संथाल परगना सह हजारीबाग।

दूसरे लोकसभा चुनाव 1957 में बिहार में दो सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र थे–चम्पारण, हाजीपुर, दरभंगा,सहरसा, दुमका, मुंगेर, सासाराम और नवादा।

पहले लोकसभा चुनाव 1952 में देशभर में 86 दो सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र थे तथा दूसरे लोकसभा चुनाव 1957 में देशभर में 91 दो सदस्यीय लोकसभा क्षेत्र थे। 1962 के लोकसभा चुनाव से दो सदस्यीय क्षेत्र का प्रावधान ख़त्म कर दिया गया।

1952 के प्रथम लोकसभा चुनाव में अटल बिहारी वाजपेयी चुनाव लड़े थे, जिसमें उनकी हार हुई थी।

1957 के चुनाव में वाजपेयी जी तीन लोकसभा क्षेत्रों– लखनऊ, मथुरा तथा बलरामपुर से एक साथ चुनाव लड़े थे, जिसमें लखनऊ तथा मथुरा से हारे थे तथा बलरामपुर से चुनाव जीते थे।

1951 में रायबरेली से लोकसभा चुनाव लड़कर फिरोज गाँधी ने जीत हासिल की थी। इंदिरा गाँधी के पति फिरोज गाँधी रायबरेली से चुनाव लड़ने वाले गाँधी – नेहरु परिवार के पहले व्यक्ति थे। उनके बाद रायबरेली से श्रीमती इंदिरा सांसद चुनी जाती रहीं। उनकी मृत्यु के बाद सोनिया गाँधी वहाँ से सांसद बनती रहीं। वर्तमान 18वीं लोकसभा में राहुल गाँधी सांसद चुने गए हैं।

दरभंगा महाराज कामेश्वर सिंह, जिनका शासनकाल (1929-1947) था, 1952 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेज के टिकट से वंचित होने के कारण दरभंगा नॉर्थ सीट से निर्दलीय चुनाव लड़े थे तथा कांग्रेसी उम्मीदवार श्यामनंदन मिश्र से हार गए थे। महाराज को 56 हजार 53 मत तथा श्यामनंदन मिश्र को 64 हजार 314 मत मिले थे। दरभंगा महाराज ने चुनाव प्रचार के लिए कार्यकर्त्ता को एक हजार साईकिल बाँटी थी। उक्त चुनाव 1952 के बाद महाराज कभी चुनाव नहीं लड़े।

1952 के पहले लोकसभा चुनाव में पटना– पूर्वी लोकसभा सीट से तारकेश्वरी सिन्हा ने जीत दर्ज की थी। वह बिहार की पहली महिला सांसद थीं। उन्होंने लगातार चार चुनावों में कांग्रेसी सांसद के रूप में जीत दर्ज की थीं। वह छात्रराजनीति से आई थीं और स्वतंत्रता संग्राम में भी सक्रिय रही थीं।

1952 में सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र मुजफ्फरपुर पूर्वी के नाम से जाना जाता था। सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र पहली बार 1957 में अस्तित्त्व में आया। आचार्य जे. बी. कृपलानी इसके पहले सांसद बनें। कृपलानी प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी से जीते थे। उन्होंने निर्दलीय बुझावन साह को 70 हजार 778 मतों से हराया था। उन्हें एक लाख 25 हजार 613 मत मिले तथा बुझावन साह को 54 हजार 835 मत मिले। कृपलानी का जन्म 11 नवम्बर 1888 को सिंध (पकिस्तान) के हैदराबाद में हुआ था। ये पर्यावरण विद् तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने फॉरग्यूसन कॉलेज पुणे से अपनी शिक्षा पूरी की थी।

1952 के पहले लोकसभा चुनाव में मुजफ्फरपुर नॉर्थ (सामान्य) नाम से दो सीटें थीं। एक सीट से चंदेश्वरनारायण प्रसाद सिन्हा और दूसरे से दिग्विजय सिंह को जीत मिली थी। मुजफ्फरपुर सेंट्रल से श्यामनंदन सहाय जीते थे।

1952 के लोकसभा आम चुनाव के बाद 1957 के दूसरे चुनाव में राज्यों के पुनर्गठन के बाद परिदृश्य काफी बदल गया।

1957 के दूसरे लोकसभा चुनाव में शिवहर सीट का नाम पुपरी लोकसभा था। इस चुनाव में मात्र तीन उम्मीदवार थे। कांग्रेस के दिग्विजयनारायण सिंह ने पीएसपी (प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी) के ठाकुर युगल किशोर सिंह को मात्र 1.31% के मतों के अंतर से हराया था।

तीसरे निर्दलीय प्रत्याशी रामइकबाल सिन्हा को 12.55% मत मिले थे। कुल मतदाता की संख्या 3,90,892 थी। मतदान करनेवाले की संख्या 2,07,061 था। मतदान प्रतिशत 52.97% था।

1952 और उसके पहले सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र मुजफ्फरपुर पूर्वी में था। 1962 में दो लोकसभा क्षेत्र वजूद में आए – सीतामढ़ी और पुपरी। सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र में सीतामढ़ी जिले के अलावे, मुजफ्फरपुर जिले का औराई विधानसभा क्षेत्र भी था। पुपरी लोकसभा क्षेत्र में पुपरी, शिवहर और पूर्वी चम्पारण का कुछ भाग शामिल था। 1962 के चुनाव में पुपरी लोकसभा सीट के लिए नलिनी रंजन पहला सांसद बने। पुनः 1967 में भी वे ही सांसद चुने गए। 1972 में हरि किशोर सिंह सांसद चुने गए।

1977 में परिसीमन बदलने पर पुपरी लोकसभा का वजूद खत्म हो गया तथा शिवहर लोकसभा अस्तित्त्व में आया। 1977 में ठाकुर गिरिजानंदन सिंह शिवहर संसदीय क्षेत्र से सांसद चुने गए।

नागेन्द्र प्रसाद यादव जो 1972 में सीतामढ़ी संसदीय चुनाव क्षेत्र से जीते थे। 1977 में महंत श्यामसुंदर दास से हार गए।

पहले लोकसभा चुनाव में 14 राष्ट्रीय तथा 39 क्षेत्रीय दलों ने भाग लिया था। इन 14 राष्ट्रीय दलों में प्रमुख थे :-

1.	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	2.	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
3.	सोशलिस्ट पार्ट	4.	किसान मजदूर प्रजा पार्टी
5.	अखिल भारतीय हिन्दू महासभा	6.	अखिल भारतीय रामराज्य परिषद
7.	ऑल इण्डिया भारतीय जनसंघ	8.	वोलशेविक पार्टी ऑफ इण्डिया सहित अन्य शामिल थीं।

1950 में स्थापना के बाद से 15 अक्टूबर 1989 तक चुनाव आयोग एक सदस्यीय था। केवल मुख्य चुनाव आयुक्त इसके सदस्य थे। बाद में राष्ट्रपति ने दो और चुनाव आयुक्तों को नियुक्ति करके इसे बहुसदस्यीय (त्रिसदस्यीय) बना दिया।

पहली लोकसभा की अधिसूचना 1 नवम्बर 1951 को हुई। दसूरी लोकसभा की अधिसूचना 19जनवरी 1957 तथा मतदान 24 फरवरी 1957 से 15 मार्च 1957 तक 20 चरणों में हुआ। तीसरे के लिए चुनाव अधिसूचना 13 जनवरी 1962 से 20 जनवरी 1962, चौथे के लिए 13 से 16 जनवरी 1971 तक, पाँचवे के लिए 27 जनवरी से 3 फरवरी 1977 तक की गई थी।

1980 से 1996 तक चुनाव अधिसूचना एक ही तिथि को जारी की गई थी। टी.एन. शेषण के समय 1991 तथा 1996 की अधिसूचना एक ही तिथि में हुई थी।

1998 से विभिन्न तिथियों में पुनः अधिसूचना शुरू हुई। 1991 से 1999 के बीच चार बार चुनाव हुए। सबसे लम्बा चुनाव 1957 में 20 चरणों में हुआ था तथा सबसे छोटा चुनाव 1980 में दो चरणों में हुआ था।

चुनाव आयोग द्वारा आदर्श आचार संहिता का शुरूआती स्वरूप वर्ष 1960 में केरल विधानसभाओं में दिखा। लेकिन पहलीबार वृहद् प्रयोग वर्ष 1968 में देश के कई राज्यों के मध्यावधि चुनाव के लिए किया गया।

चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित 'लीप ऑफ फेथ' के अनुसार लोक प्रतिनिधित्व (संशोधन) विधेयक 1958 में फोटो पहचानपत्र जारी करने का प्रावधान किया गया था। भारत के पहले चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन के छोटे भाई और तत्कालीन कानूनमंत्री अशोक कुमार सेन ने नवम्बर 1958 को विधेयक संसद के निचले सदन में पेश किया। 30 दिसम्बर 1958 को यह विधेयक कानून बन गया।

2021 में चुनाव आयोग ने मतदाता पहचानपत्र का इलेक्ट्रोनिक वर्जन (e-EPIC) लांच किया। यह मतदाता पहचानपत्र का सुरक्षित पीडीएफ वर्जन है।

नीले रंग की अमिट स्याही को आम चुनाव में शामिल करने का श्रेय देश के पहले चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन को जाता है। 1952 में "काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च" के वैज्ञानिकों ने नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी में इस अमिट स्याही का अविष्कार किया था। इसी अमिट स्याही का प्रयोग मतदाता की अंगुली पर किया जाता है। इस स्याही को बनाने में सिल्वरनाईट्रेट नामक रसायन का प्रयोग किया जाता है। जिसे अंगुली पर लगाने पर शरीर में मौजूद सोडियम के साथ मिलकर यह सिल्वरक्लोराईड बनाने लगता

है, जिससे यह नीली स्याही काले रंग में बदल जाती है। इसका रंग साबुन से भी नहीं छूटता। जब हमारी त्वचा की कोशिकाएँ उतरती हैं, तब इसका रंग फीका होने लगता है। अमिट स्याही को बनाने का फॉर्मूला गुप्त है। इसे सिर्फ "मैसूर पेण्ट एंड वार्निश लिमिटेड" को बनाने का अधिकार प्राप्त है। इसी कंपनी से हर चुनाव में अमिट स्याही की खरीद की जाती है।

वर्त्तमान 18वीं लोकसभा आम चुनाव 2024 के लिए "मैसूर पेण्ट एंड वार्निश लिमिटेड" ने 58 करोड़ की अमिट स्याही आपूर्ति की है। वर्त्तमान चुनाव में 26.6 लाख अमिट स्याही की शीशियों की जरुरत थी। जिसमें सबसे बड़ी खेप उत्तर प्रदेश को तथा सबसे छोटी खेप लक्षद्वीप को भेजी गई है।

वर्त्तमान लोकसभा चुनाव की घोषणा 16 मार्च 2024 को की गई। यह चुनाव 19 अप्रैल 2024 से 01 जून 2024 तक 7 चरणों में कराया गया है। मतगणना 4 जून 2024 को कराया गया है। यह चुनाव 78 दिनों में संपन्न हुआ है। यह चुनाव 1952 की प्रथम लोकसभा चुनाव के बाद सबसे लम्बा चुनाव रहा।

भारत की 18वीं (वर्त्तमान) लोकसभा चुनाव 2024 के समय कुल जनसंख्या – लगभग 1 अरब 40 करोड़ है।

मतदाताओं की संख्या	–	लगभग 97 करोड़
राजनीतिक दलों की संख्या	–	2 हजार 8 सौ
मतदान केन्द्रों की संख्या	–	साढ़े दस लाख
वोटिंग मशीन -ईवीएम की संख्या	–	55 लाख
मतदान करने वालों की संख्या	–	64.4 करोड़
महिलाओं का मत	–	31 करोड़

1951-1952 को जनसंघ वर्त्तमान की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) है। जिसे 543 सीटों पर हुए चुनाव में अकेले – 240 सीटें मिली है, यह सबसे बड़ी जीत हासिल करने वाली पार्टी है। किन्तु, यह अकेले सरकार बनाने में समर्थ नहीं हो पायी है। क्योंकि सरकार बनाने के लिए 272 सदस्यों की आवश्यकता थी। किन्तु, भाजपा ने अपने घटक दलों के साथ गठबंधन कर राजग (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) के रूप में 293 सीटें प्राप्त की है तथा भाजपा नेता नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार बनाई गई है, जिसके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी तथा लोकसभा अध्यक्ष भाजपा के ही ओम बिड़ला जी चुने गए हैं।

दूसरी ओर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 99 सीटें प्राप्त की हैं। अपने घटक दलों के साथ I.N.D.I.A. (इण्डिया) गठबंधन के रूप में कांग्रेस ने कुल - 234 सीटें पाई हैं तथा कांग्रेस पार्टी के नेता नेहरु - गाँधी परिवार के राहुल गाँधी जी लोकसभा में विपक्षी नेता बनाये गए हैं। 24 जून 2024 से लोकसभा का सत्र प्रारंभ हो चूका है। अब भारतीय जनतंत्र युवा भारत के रूप में प्रौढ़ता को प्राप्त कर चुका है।

• • •